बकरियों का प्लेग रोग (पी0पी0आर0)

डा0 अनिल कुमार[1], डा0 विवेक कुमार सिंह[2] डा0 सोनम भट्ट[3] एवं डा0 पल्लव शेखर[4]
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना (बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, पटना)
[1,2]सहायक प्राध्यापक, पशुचिकित्सा क्लिनिकल कॉम्पलेक्स (भी0सी0सी0), बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना
[3,4] सहायक प्राध्यापक, पशुचिकित्सा औषधि विभाग, बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना।

यह रोग भेड़ो की अपेक्षा बकरियों में तेजी से फैलने वाला संक्रामक रोग है। इस रोग को "गोट प्लेग" के नाम से भी जाना जाता है। यह रोग 4–12 माह के बकरियों में अधिक होता है। इस बिमारी से क्षेत्र की लगभग 75–90% बकरियाँ प्रभावित हो सकती है। रोग से प्रभावित पशु में उच्च ज्वर, निमोनिया, दस्त आदि लक्षण पाये जाते हैं एवं निर्जलीकरण (पानी की कमी) के कारण मृत्यु हो जाती है, जिससे पशु पालकों को भारी आर्थिक नुकसान होता है।

रोग का कारण एवं प्रसारण :

यह रोग एक विषाणु जनित संक्रामक रोग है, जो मोरविली नामक विषाणु के द्धारा होता है। इनके विषाणु बीमार पशु की आँख, नाक एवं मुँह के स्राव तथा मल में पाये जाते है। नजदीकी स्पर्श एवं संपर्क से रोग के विषाणु स्वस्थ पशुओं के मुँह अथवा श्वसन तंत्र तथा आखों की कनजंक्टाइवा के माध्यम से प्रवेश कर जाते हैं। रोग कि उत्पती में तनाव की अवस्थाएँ (जैसे ढुलाई, गर्भावस्था, परजिवी रोग अथवा अन्य बीमारी से ग्रसित होना) भी सहायक होती हैं।

रोग के लक्षणः

रोग की प्रारभ्भिक अवस्था में अचानक बुखार, खाने में अरुचि एवं सुस्ती होती है। तत्पश्चात प्रभावित पशु के आँख, मुँह एवं नाक से पानी की तरह स्राव निकलता है, जो की बाद में गाढ़ा हो जाता है। गाढ़े स्राव के कारण कभी–कभी रोग ग्रस्त पशु कि पलकें आपस में सट जाती है। रोग कि अवस्था में पशुपालक बन्धु अक्सर सोचते है कि पशु को ठण्ड लग गई है जिसे वे इन्हे ठण्ड से बचाने का प्रयास करते हैं। बिमारी के दो तीन दिन के पश्चात मुँह के अंदरुनी भाग लाल हो जाते हैं एवं इन में छाले या जख्म हो जाते हैं। रोगग्रस्त बकरी के जीभ पर चोकर के समान पपड़ी भी जम जाती है। रोगग्रस्त पशु में खाँसी व निमोनिया हो जाता है, जिससे साँस लेने में कठिनाई होती है। ज्वर होने के तीन चार दिनों के बाद दस्त शुरु हो जाते है जिससे पशु निर्जलीकरण (पानी की कमी) के कारण अत्यन्त कमजोर हो जाता है तथा अन्त में इनकी मृत्यु हो जाती है। इस बिमारी में मादा पशु का गर्भपात भी हो सकता है।

चित्र संः– 01 पी0पी0आर0 रोग से ग्रसीत बकरी

उपचार एवं रोकथाम :

विषाणु जनित रोग होने के कारण इस रोग कि कोई विशिष्ट चिकित्सा नहीं है। चिकित्सक द्वारा उचित परार्मश लेकर तत्काल चिकित्सा ही एक मात्र बचाव है। रोग की चिकित्सा उनके लक्षणों के आधार पर की जाती है। रोग कि चिकित्सा के लिए प्रतिजैविक औषधियाँ जैसे इनरोफ्लोक्सासीन, जेन्टामाईसिन अथवा स्ट्रप्टोपेनिसिलिन आदि का प्रयोग किया जा सकता है। इनके अलावे ज्वरनाशक एवं ऐन्टीहिस्टामिन औषधियों का भी प्रयोग करने से फायदा होता है। अधिक दस्त होने पर निर्जलीकरण के कारण पशु के कमजोर हो जाने पर नार्मल सेलाईन अथवा डेक्सट्रोज इंजेक्शन नस में देना पड़ता है। अगर संभव हो तो रोग ग्रस्त पशु के नस में 5 मि0 ली0 हाईपरइम्युन सिर में दीया जा सकता है, जिससे बीमार पशु स्वस्थ हो जाता है। परन्तु यह दवा पशुचिकित्सक के निर्देशन में प्रयोग में लाना चाहिए।

रोग कि रोकथाम के लिए निम्न बातों का ख्याल रखना चाहिए :–

(क) जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि विषाणु जनित रोग होने के कारण इस रोग कि कोई विशिष्ट चिकित्सा नही है। अतः रोग ना होने पावे, इसके लिए टीकाकरण ही एक मात्र कारगर उपाय है। यह टीका प्रत्येक तीन वर्ष पर एक बार लगाया जाता है। टीकाकरण हेतु सभी बकरियों एवं बच्चे जो चार माह कि उम्र या उससे अधिक हो, को पी0पी0आर0 का टीका लगवाना चाहिए।

(ख) टीकाकरण करने के पहले पशुओं को कृमि नाशक दवा देनी चाहिए।

(ग) बीमार बकरियों को स्वस्थ बकरियों से बिल्कूल अलग रखना चाहिए तथा बाजार से खरीद कर लाई गई बकरियों को टीकाकरण के बाद ही स्वस्थ बकरियों के साथ रखना चाहिए।

(घ) बीमार पशुओं को चरने के लिए बाहर नही भेजना चाहिए क्योंकी इससे अन्य पशुओं में भी संक्रमण हो सकता है।

(ङ) रोग ग्रसित पशु कोपाषक एवं मुलायम चारा खिलाना चाहिए।

(च) रोग से मृत पशुओं को जमीन में गाड़ देना चाहिए अथवा सम्पूर्ण रुप से जला कर नष्ट कर देना चाहिए।

(छ) पशु के आवास, उनके खाने एवं पीने के बर्तनों को नियमित रुप से साफ रखना चाहिए।